

Eklavya University

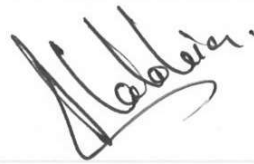
Damoh (M.P.)

Bachelor of Arts

(B.A. Semester – I&II)

Geography

Curriculum
(2023-2024)



1
Nedhi

Bachelor of Arts - B.A. Geography Semester I&II

VISION STATEMENT OF EKLAVYA UNIVERSITY

एकलव्य विश्वविद्यालय सीखने के माध्यम से जीवन और समाज के उन्नयन हेतु संकल्पित है।

MISSION STATEMENT OF EKLAVYA UNIVERSITY

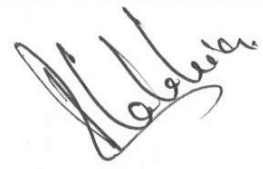
हमारा मिशन सामाजिक और नैतिक जिम्मेदारी के साथ दिमाग बनाने के लिए समर्पित उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करना है। हम छात्रों को एक क्लास रूम की सीमाओं से परे शिक्षित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं ताकि उन्हें बेहतर व्यक्ति बनाया जा सके और उनके व्यक्तित्व को विकसित किया जा सके। भौगोलिक स्थिति पर जाकर छात्रों को एक्सपोजर देने के लिए शैक्षिक दौरे का आयोजन करना। पाठ्यक्रम में शामिल विषयों पर सेमिनार, कार्यशालाएं आयोजित करने के लिए छात्रों को प्रेरित करना तथा अकादमिक उत्कृष्टता और प्रदर्शन प्राप्त करने में मदद करेगा। सैद्धांतिक और व्यावहारिक भूगोल के छात्रों में एक व्यापक प्रशिक्षण प्रदान करना। हमारे शोध में अंतःविषय दृष्टिकोण अपनाने और गहन विषयों के साथ सहयोगी परियोजनाओं को पूरा करना। ग्लोबल वार्मिंग, जलवायु परिवर्तन और हमारे अनुसंधान और शिक्षण में अर्थव्यवस्था, समाज और मानव कल्याण पर इसके प्रभाव की उभरती हुई मानव चिंता को संबोधित करना। आपदा प्रबंधन और पर्यावरण योजना के मुद्दों को संबोधित करना। उपरोक्त दृष्टि को बदलने के लिए हमारा विभाग निम्नलिखित मिशनों की खोज कर रहा है।

मूल्य आधारित शिक्षा के द्वारा आदर्श जीवन, आजीविका और उद्योग को पोषित करना।

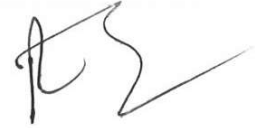
- अनुसंधान और विषय के गूढ़ ज्ञान हेतु शिक्षा को व्यावहारिक बनाना।
- सामाजिक एवं तकनीकी कौशल के माध्यम से छात्रों को रोजगार हेतु तैयार करना।
- अनुसंधान और रचनात्मक परीक्षण के माध्यम से ज्ञान का प्रचार-प्रसार करना।
- शिक्षा; अनुसंधान और नवाचारों में उत्कृष्टता एवं प्रबंधन के लिए प्रतिबद्धता के साथ शिक्षा को प्रत्येक व्यक्ति की पहुँच में लाना।
- छात्रों में व्यवहारिक एवं नैतिक शिक्षा के माध्यम से समस्या समाधान कौशल, सामुदायिक नेतृत्व कौशल एवं सामूहिक सामाजिक सेवा कार्य के लिए प्रतिबद्ध करना।
- समान अवसर एवं रोजगार को दृष्टि में रखकर छात्रों को आर्थिक सशक्तीकरण की ओर अग्रसर करना।
- शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षा और अनुसंधान में उत्कृष्टता के माध्यम से व्यक्ति की जीवन शैली और पद्धति को समुन्नत करना।











VISION STATEMENT OF DEPARTMENT

विभाग की मुख्य दृष्टि क्षेत्र की भौगोलिक विशेषताओं के सफल मूल्यांकन के लिए सक्षम मानव संसाधन उत्पन्न करने के लिए भौगोलिक विज्ञान के ज्ञान में अंतर को समृद्ध करना, पारिस्थितिकी के विभिन्न पहलुओं विशेष रूप से भूमि, खानों, वन और जल संसाधन के साथ दुर्ग और आसपास के क्षेत्र की उच्च भूमि के विभिन्न भौगोलिक गुणों का पता लगाना है। क्षेत्र की जियोजेनिक प्रक्रिया भी विभाग के लिए चिंता का एक प्राथमिक दृष्टिकोण है।

शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में उत्कृष्टता के द्वारा मानव जीवन को उन्नत करने हेतु समर्पित।

MISSION STATEMENT OF DEPARTMENT

भूगोल में स्नातक में भौतिक, क्षेत्रीय और आर्थिक पहलुओं सहित पृथ्वी विज्ञान का अध्ययन शामिल है। यह दो साल का कार्यक्रम है जिसमें पृथ्वी और मानव गतिविधि की भौतिक विशेषताओं का व्यापक और गहन अध्ययन शामिल है।

विभाग छात्रों के लिए सेमिनार और कार्यशाला आयोजित करता है। इस विभाग के छात्र अध्ययनशील और श्रमसाध्य हैं। इस संस्थान के अधिकांश छात्रों ने विश्वविद्यालय में मेरिट स्थिति हासिल की है। भूगोल का अध्ययन स्थान, स्थान मानव पर्यावरण और अंतःक्रिया आंदोलन और क्षेत्र पर आधारित है।

भूगोल विभाग ने विभाग के प्रमुख की देखरेख में छात्र के लिए भ्रमण यात्रा का आयोजन किया।

- भूगोल की शिक्षा में उत्कृष्टता एवं विविधता में वृद्धि करना।
- भूगोल के प्राचीन, मध्यकालीन और अन्य ज्ञान स्रोतों को सभी के लिए सुलभ कराना।
- भूगोल को समयानुकूलन के साथ प्रासंगिक बनाना।

PROGRAMME EDUCATIONAL OBJECTIVES (PEOs)

- भूगोल विषय में स्नातक (बी.ए.) के उपरान्त छात्रों को भूगोल में विशिष्ट अध्ययन एवं शोध के लिए अवसर प्राप्त होंगे।
- भूगोल के विशिष्ट ज्ञान से महत्वपूर्ण एवं तुलनात्मक शोध को प्रोत्साहन मिलेगा।
- भूगोल में किया गया अध्ययन एवं स्वयं के द्वारा किये गए शोध – अन्वेषण से स्वयं के बौद्धिक स्तर को राष्ट्रीय – अंतर्राष्ट्रीय और सामाजिक – आध्यात्मिक पटल पर स्थापित कर सकेगा।

Devi Prasad 3 *Har*

M. Babbar

RS
gita
Radha

PROGRAMME OUTCOMES (POs)

- भूगोल में स्नातक होने से छात्रों में सामाजिक, आर्थिक, ऐतिहासिक, भौगोलिक, राजनैतिक वैचारिक और उनसे संबंधित विषयों की सोच विकसित एवं पल्लवित होगी।
- यह कार्यक्रम छात्रों में विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में सम्मिलित होने एवं शोध कार्य करने के लिए प्रेरणा प्रदान करेगा।
- भूगोल में स्नातक करने के उपरान्त छात्र एम.ए., एम.फिल, पी-एच.डी. आदि उपाधियां प्राप्त कर उस ज्ञान से विशिष्ट मुद्दों का समाधान एवं नवाचार कर सकेंगे।

PROGRAMME SPECIFIC OUTCOMES (PSOs)

- भूगोल का पर्याप्त ज्ञान अर्जित करना।
- क्षेत्र के हर भौगोलिक पहलू के बारे में सभी संभव ज्ञान प्रदान करना।
- विद्वानों को अनुसंधान कौशल से समृद्ध करना ताकि दृष्टि का अनुवाद किया जा सके।
- सामाजिक योग्यता और सेवा के लिए उपयुक्त मानव संसाधन बनाना।

Handwritten signatures:
Gor
Diplomas
Koblar
R
G
Rach

Course code	Human Geography : Environment and Culture (Paper -1)/Major/Minor	L	T	P	C
23AIGEOG1T	मानव भूगोल: वातावरण एवं संस्कृति (प्रश्न पत्र - 1)/मेजर/माईनर	04	-	02	06
Pre-requisite	Nil	Syllabus version			
	90 Hours	60			
Semester - I					
Level - 05					
Course Objectives: (CO)					
<ol style="list-style-type: none"> विषय की समग्र और व्यापक जानकारी प्रदान करना। व्याकरण के माध्यम से भूगोल की संरचना की समझ में सहायक होगा। मानव भूगोल की मुख्य संकल्पनाओं और मूल सिद्धांतों जैसे - स्थान, क्षेत्र, मापन और भूदृश्य का वर्णन एवं विवेचन कर सकेंगे। छात्रों के भविष्य को आकार देने के लिए एक स्वीकार्य वातावरण में उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा और अनुसंधान प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। 					
Course Learning Outcome: (CLO)					
<ol style="list-style-type: none"> भूगोल की विशेषताओं का ज्ञान करना। छात्रों को प्रकृति और पर्यावरण संरक्षण की प्रेरणा मिलेगी। सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की विविधताओं और स्थानों को समझ पायेंगे। पृथ्वी की महिमा से अवगत होकर छात्र में पृथ्वी माता के प्रति समर्पण की भावना विकसित होगी। 					
Student Learning Outcomes (SLO):					
<ol style="list-style-type: none"> छात्र के धार्मिक और आध्यात्मिक व मनोवैज्ञानिक विकास में सहयोगी सिद्ध होगा। भूगोल विषय में छात्रों को आधुनिक दुनिया की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बनाया जा सके। भूगोल विषय में छात्रों को पर्याप्त व्यावहारिक कौशल से लैस करने के लिए उन्हें समाज में उत्पादक रूप से कार्य करने में सक्षम करेगा। स्थान की महत्ता की समझ के द्वारा भौगोलिक परिप्रेक्ष्य में समस्या के समाधान तक पहुंच सकेंगे। 					
Unit - 1 मानव भूगोल का परिचय					15
<ol style="list-style-type: none"> मानव भूगोल की परिभाषा, प्रकृति, उद्देश्य एवं विषय-क्षेत्र मानव भूगोल का विकास अन्य विज्ञानों से मानव भूगोल का अंतर्संबंध क्षेत्रीय विभिन्नता की संकल्पना भारतीय आचार-विचार एवं मूल्य 					
Unit - 2 मानव, वातावरण एवं संस्कृति					15
<ol style="list-style-type: none"> मानव एवं वातावरण संबंध <ol style="list-style-type: none"> निश्चयवाद, संभववाद एवं नव-निश्चयवाद क्षेत्रवाद एवं संस्कृतिवाद भूगोल में द्वैतवाद <ol style="list-style-type: none"> क्रमबद्ध बनाम प्रादेशिक भौतिक बनाम मानव सैद्धांतिक बनाम प्रायोगिक परिवर्तनवाद एवं व्यवहारवाद की संकल्पना 					



5. संस्कृति की परिभाषा, विशेषताएं	
6. मानव संस्कृति के बदलते प्रतिरूप	
Unit – 3 वातावरण एवं मानवीय अनुकूलन:	15
1. विश्व के वृहद पर्यावरणीय प्रदेश 2. मानव प्रजातियों का वर्गीकरण, भारत के विशेष संदर्भ में 3. मानव वातावरण अनुकूलन 3.1. एस्कमो – शीत प्रदेश 3.2. बुश मैन- उष्ण प्रदेश 3.3. भारतीय जरावाजन जाति- भूमध्यरेखीय प्रदेश 3.4. मध्यप्रदेश की भील, गोंड एवं सहारिया जनजाति	
Unit – 4 जनसंख्या एवं मानव विकास:	15
1. विश्व जनसंख्या की वृद्धि, घनत्व और वितरण 2. जनसंख्या वितरण को प्रभावित करने वाले भौतिक एवं सांस्कृतिक कारक 3. जनसंख्या स्थानान्तरण एवं अप्रवास के कारण 4. जनसंख्या विस्फोट एवं अनुकूलतम जनसंख्या की संकल्पना 5. मानव विकास की संकल्पना	
Unit – 5 मानव अधिवास एवं सांस्कृतिक प्रक्रियाएं:	15
1. ग्रामीण एवं नगरीय अधिवास के प्रकार एवं प्रतिरूप 2. ग्रामीण अधिवास की पर्यावरणीय समस्याएँ 3. नगरीय अधिवास का पदानुक्रम 4. भारतीय नगरों एवं शहरों की विशिष्ट विशेषताएँ 5. सांस्कृतिक प्रक्रियाएं: मानव समूहों की अन्तर क्रिया 6. भारत में मानव अधिवास की समस्याएँ	

Prakash

Har

Sharma

AK

Rudra

सार बिंदु (की वर्ड)/टैग : क्षेत्रीय विभिन्नता, भारतीय आचार-विचार, वातावरण, संस्कृति, परिवर्तनवाद, मानव प्रजाति, मानव विकास, पदानुक्रम

Mode: Flipped Class Room, Case Discussion, Lectures

Text Book(s) / Reference Books

1. Bergwan Edward E: Human Geography, Culture, Connections and Landscape, Prentice Hall, New Jersey (1995).
2. Gregory, D.: Ideology, Science and Human Geography, Hutchinson London, 1978.
3. Smith, D.M.: Human Geography – A Welfare Approach, Edward Arnold London, 1977.
4. Brunhes, J.: Human Geography, London, 1952.
5. Carr. M Patterns: Process and Change in Human Geography, MacMillan Education, London (1987).
6. Fellman J.L.: Human Geography- Landscape of Human Activates Brow and Benchman Pub., U.S.A. (1999).
7. De Blij H.d.: Human Geography- Culture, Society and Space, John Wiley, New York, 1996.
8. Johnston R., Gregory D., Pratt G., et.al: The Dictionary of Human Geography, Blackwell Publication (2008).
9. Gilbert, P.: Tribal India, Rawat Publication, Jaipur, 1978.
10. Taylor, G.: Geography in 20th Century (3rd Ed.)
11. कौशिक एस.डी.: मानव भूगोल, रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ, उ.प्र.– (2010).
12. हुसैन माजिद: मानव भूगोल, रस्तोगी, रावत प्रकाशन जयपुर (2012).
13. मामोरिया एवं सिसौदिया– मानव भूगोल, साहित्य भवन, आगरा
14. मौर्य एस.डी.ए.: मानव भूगोल, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद (2012).

भाग द – अनुशासित मूल्यांकन विधियां:

अनुशासित सतत मूल्यांकन विधियाँ: लिखित परीक्षा, सतत आन्तरिक मूल्यांकन, साक्षात्कार विधि, वाग्यवहार विधि, वस्तुनिष्ठ प्रश्न, लघुउत्तरीय प्रश्न निर्माण अधिकतम अंक: 100

सतत व्यापक मूल्यांकन (CCE) अंक: 40

विश्वविद्यालयीन परीक्षा (UE) अंक: 60

आंतरिक मूल्यांकन: सतत व्यापक मूल्यांकन (CCE) : 40	क्लास टेस्ट असाइमेंट / क्विज / सेमीनार / प्रस्तुतीकरण / (प्रेजेंटेशन)	20 20 कुल अंक: 40	
आकलन: विश्वविद्यालयीन परीक्षा : समय– 03.00 घंटे	अनुभाग(अ): पांच अति लघु प्रश्न अनुभाग(ब): पांच लघु प्रश्न अनुभाग(स): चार दीर्घ उत्तरीय प्रश्न	01 X 05 = 05 03 X 05 = 15 10 X 04 = 40 कुल अंक 60	
कोई टिप्पणी / सुझाव :			

Prakash

How

Redu

Shahin

KS
late

Course code	Geography - Paper- II/Major/Minor	L	T	P	C
23AIGEOJRT	भौतिक भूगोल- स्थलमंडल (भू-आकृति विज्ञान) (प्रश्न पत्र 2)/मेजर/माईनर	04	-	02	06
Pre-requisite	Nil	Syllabus version			
	90 Hours	60			
Semester – II					
Level - 05					
Course Objectives: (CO)					
<ul style="list-style-type: none"> • विषय की व्यापक जानकारी प्रदान करना। • छात्रों में भूगोल विषय के प्रति रुचि जाग्रत करना। • भूगोल विषय के अभ्यास की प्रवृत्ति को विकसित करना। • भूगोल विषय कुशलता एवं दक्षता को विकसित करना। • नैतिक मूल्यों के विकास में सहायक होगा। • प्राचीन सामाजिक संरचना एवं उत्कृष्ट समाज का ज्ञान होगा। • पृथ्वी की आंतरिक संरचना, पृथ्वी का निर्माण करने वाली शैलों एवं पृथ्वी की सतह पर परिवर्तन लाने वाले कारकों को समझेंगे। • भू-आकारों के निर्माण में संरचना, अवस्था एवं समय की भूमिका का मूल्यांकन कर सकेंगे। 					
Course Learning Outcome: (CLO)					
<ul style="list-style-type: none"> • भूगोल की क्षमताओं एवं विशेषताओं का ज्ञान करना। • भूगोल की दक्षता और उसकी सूक्ष्मता का ज्ञान प्रदान करना। 					
Student Learning Outcomes (SLO):					
<ul style="list-style-type: none"> • छात्रों में अनुकूलन की सोच विकसित होना। • भूगोल विषय में विषयगत समस्याओं का निदान करने की क्षमता का विकास होना। • प्राचीन भारतीय विद्वानों के भौतिक भूगोल के विकास में योगदान को जान पाएंगे। • भू-आकारों को बनाने में प्राकृतिक एवं मानवीय कारकों के प्रभाव का विश्लेषण कर सकेंगे। • पृथ्वी की सतह के निर्माण एवं विकास में अनाच्छादन की प्रक्रिया को जानेंगे • छात्र में कथा लेखन की शैली का विकास होगा। • उपदेशात्मक काव्य से नैतिक मूल्यों का विकास होगा। 					
Unit – 1 भौतिक भूगोल एवं पृथ्वी					15
<ol style="list-style-type: none"> 1. भौतिक भूगोल की प्रकृति एवं विषय वस्तु 2. ब्रह्माण्ड और सौर-मण्डल <ol style="list-style-type: none"> 2.1. बिग बैंग सिद्धांत 2.2. प्राचीन भारतीय ग्रंथों में ब्रह्माण्ड और पृथ्वी की उत्पत्ति संबंधी विचार 3. पृथ्वी की उत्पत्ति संबंधी परिकल्पनाएँ <ol style="list-style-type: none"> 3.1. ऑटोशिमड की धूल और बादल अन्तर्तारक परिकल्पना 4. वैदिक ब्रह्माण्ड भूगोल का सामान्य परिचय <ol style="list-style-type: none"> 4.1. जैन भूगोल का सामान्य परिचय 5. पृथ्वी की आयु 6. भू-गर्भिक समय सारणी 					

Deepti

8

Hai

Deepti

Deepti

Deepti

Unit – 2 पृथ्वी	15
<ol style="list-style-type: none"> 1. पृथ्वी की आंतरिक संरचना 2. चट्टानें- उत्पत्ति, प्रकार एवं संघटन 3. महाद्वीप एवं महासागरों की उत्पत्ति 4. समस्थिति सिद्धांत 	
Unit – 3 पृथ्वी की गतिशीलता	15
<ol style="list-style-type: none"> 1. वैगनर का महाद्वीपीय विस्थापन सिद्धांत 2. प्लेट विवर्तनिकी 3. पर्वत निर्माण के सिद्धांत 4. अन्तर्जात एवं बहिर्जात बल 5. भूकम्प, ज्वालामुखी एवं सुनामी 	
Unit – 4 भू-आकृतिक प्रक्रम	15
<ol style="list-style-type: none"> 1. अपक्षय: नियंत्रक कारक, प्रकार एवं भू-आकृतिक महत्त्व 2. वृहदक्षरण: प्रभावित करने वाले कारक, वर्गीकरण एवं भू-आकृतिक महत्त्व 3. अपरदन चक्र: डेविस और पेंक 4. ढाल विकास की संकल्पना 	
Unit – 5 स्थलरूपों का विकास	15
<ol style="list-style-type: none"> 1. अपरदन, परिवहन एवं निक्षेपणकार्य एवं तत्जनित स्थलरूप – नदी, पवन, सागर, कास्ट एवं हिमानी 2. भू-आकृति विज्ञानका अनुप्रयोग – जल विज्ञान, आर्थिक भू-विज्ञान एवं प्राकृतिक आपदाएँ 3. दमोह जिले के स्थानीय भूगोल 	

सार बिंदु (कीवर्ड)/टैग : ब्रम्हाण्ड, सौर-मण्डल, भू-गर्भिक समय सारिणी, चट्टानें, समस्थिति, महाद्वीपीय विस्थापन, प्लेट विवर्तनिकी, अन्तर्जाति एवं बहिर्जाति बल, अपक्षय, वृहदक्षरण, अपरदन चक्र, ढाल विकास, कास्ट, हिमानी।

Mode: Flipped Class Room, Case Discussion, Lectures

Text Book(s) / Reference Books

1. Kale V.S. and Gupta A: "Elements of Geomorphology", Oxford University press, Calcutta (2001).
2. Monkhouse F.I.: "Principles of Physical Geography", Hodder and Stoughton, London (1960).
3. Small R.J.: "The Study of Landforms", McGraw Hill, New York (1985).
4. Strahler A.N. and Strahler A.H.: "Modern Physical Geography", John Wiley & Sons (2008).
5. Thornbury W.D.: "Principles of Geomorphology", Wiley Eastern (1969).
6. Woodridge S.W. And Morgan R.S: "The Physical Basis of Geography – An Outline of Geomorphology", Longman Green & Co. London (1959).
7. Christopher son R. W: "Geosystems: An Introduction to Physical Geography", 8 ED, Macmillan Publishing Company (2011).
8. Selby M.J.: "Earth's Changing Surface", Indian edition (2005).

Principles, *How*, *How*, *How*

9. Ali, S.M. The Geography of the Puranas, peoples Publishing House New Delhi (1996).
10. Tripathi, M.P. Development of Geographical Knowledge in ancient India, Bhrtiya Vidhya Prakashan, Varanasi (1969).
11. Dubc, B & Singh R.L. Geographical Conceptsjn Ancient India, The National Geographic Society of India BHU, Varanasi.
12. Shukla, R.K., the Geography of Ramayan, kaushal Book Depot, Delhi 2003.
13. गौतमअल्का: "भौतिक भूगोल", रस्तोगी प्रकाशन, मेरठ, उ.प्र.-(2010)।
14. सिंह सविन्द्र: "भौतिक भूगोल", प्रयाग पब्लिकेशन, इलाहाबाद, उ.प्र. (2009)।
15. अग्रवाल के.एम.एल.: "भौतिक भूगोल", साहित्य भवन प्रकाशन, आगरा।
16. टिक्का आर.एन.: "भौतिक भूगोल का स्वरूप", केदारनाथ रामनाथ, मेरठ।
17. जोशी, वाय.जी. भूगोल के भौतिक आधार मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी।
18. तिलोयपण्णत्ति, यतिवृषभाचार्य,
19. त्रिलोक सार, नेमिचन्द्र जैन सिद्धान्तचक्रवर्ती
20. तत्त्वार्थ सूत्र, अध्याय 3, आचार्य उमास्वामी

भाग द – अनुशासित मूल्यांकन विधिया
 अनुशासित सतत मूल्यांकन विधियाँ: लिखित परीक्षा, सतत आन्तरिक मूल्यांकन, साक्षात्कार विधि,
 वाग्यवहार विधि, वस्तुनिष्ठ प्रश्नलघुउत्तरीय प्रश्न निर्माण, अधिकतम अंक : 100
 सतत व्यापक मूल्यांकन (CCE) अंक: 40
 विश्वविद्यालय परीक्षा (UE) अंक : 60

आंतरिक मूल्यांकन : सतत व्यापक मूल्यांकन (CCE): 40	क्लास टेस्ट असाइमेंट / विज / सेमीनार / प्रस्तुतीकरण / प्रेजेंटेशन)	20 20 कुल अंक 40
आकलन: विश्वविद्यालयीन परीक्षा : समय- 03.00 घंटे	अनुभाग(अ): पांच अति लघु प्रश्न अनुभाग(ब): पांच लघु प्रश्न अनुभाग(स): चार दीर्घ उत्तरीय प्रश्न	01 X 05 = 05 03 X 05 = 15 10 X 04 = 40 कुल अंक 60
कोई टिप्पणी / सुझाव		

Diipkumar
Ha
Shubhan
AS
6/10